शास्त्रीय संगीत की वर्तमान परिस्थितियाँ

डॉ0 संगीता गोरंग
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, संगीत विभागाध्यक्षा
के०वी०ए० डी०ए०वी० कॉलेज फार वूमन
करनाल
Email: sangeetagorang@gmail.com

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति वेदों से मानी जाती है। सामवेद में संगीत के बारे में गहराई से चर्चा की गई है। भारतीय शास्त्रीय संगीत गहरे तक आध्यात्मिकता से प्रभावित रहा है, इसलिए इसकी शुरुआत मनुष्य जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के साधन के रूप में हुई। संगीत की महत्ता इस बात से भी स्पष्ट है कि भारतीय आचार्यों ने इसे पंचम वेद या गंधर्व वेद की संज्ञा दी है। भरत मुनि का नाटयशास्त्र पहला ऐसा ग्रंथ था जिसमें नाटक, नृत्य और संगीत के मूल सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को पूरी दुनिया मे सबसे ज्यादा जटिल व संपूर्ण संगीत प्रणाली माना जाता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की शैलियां

भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो प्रमुख शैलियां निम्नलिखित हैं–

हिंदुस्तानी शैली

हिंदुस्तानी शैली के प्रमुख ऋंगार, प्रकृति और भक्ति हैं। तबला वादक हिंदुस्तानी संगीत में लय बनाये रखने में मदद देते हैं। तानपूरा एक अन्य वाद्ययंत्र है जिसे पूरे गायन के दौरान बजाया जाता है। अन्य वाद्ययंत्रों में सारंगी व हरमोनियम शामिल हैं। हिंदुस्तानी शैली पर काफी हद तक फारसी संगीत के वाद्ययंत्रों और शैली दोनों का ही प्रभाव है।

हिंदुस्तानी गायन शैली के प्रमुख रूपः

ध्रुपद : ध्रुपद गायन की प्राचीनतम एवं सर्वप्रमुख शैली है। ध्रुपद में ईश्वर व राजाओं का प्रशस्ति गान किया जाता हे। इसमें बृजभाषा की प्रधानता होती है।

खयाल : यह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे लोकप्रिय गायन शैली है। खयाल की विषयवस्तु राजस्तुति, नायिका वर्णन, श्रृंगार रस आदि होते हैं।

धमार : धमार का गायन होली के अवसर पर होता है। इसमें प्रायः कृष्ण–गोपियों के होली खेलने का वर्णन होता है।

ठुमरी : इसमें नियमों की अधिक जटिलता नहीं दिखाई देती है। यह एक भावप्रधान तथा चपल चाल वाला श्रृंगार प्रधान गीत है। इस शैली का जन्म अवध के नवाब वाजिद अली शाह के राज दरबार में हुआ था।

टप्पा : टप्पा हिंदी मिश्रित पंजाबी भाषा का श्रृंगार प्रधान गीत है। यह गायन शैली चंचलता व लच्छेदार तान से युक्त होती है।

कर्नाटक शैली

कर्नाटक शास्त्रीय शैली में रागों का गायन अधिक तेज़ और हिंदुस्तानी शैली की तुलना में कम समय का होता है। त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षिता और श्यामा शास्त्री को कर्नाटक संगीत शैली की त्रिमुर्ति कहा जाता है, जबकि पुरंदर दास को अक्सर कर्नाटक शैली का पिता कहा जाता है। कर्नाटक शैली के विषयों में पूजा–अर्चना, मंदिरों का वर्णन, दार्शनिक चिंतन, नायक–नायिका वर्णन और देशभक्ति शामिल हैं।

कर्नाटक गायन शैली के प्रमुख रूप

वर्णम : इसके तीन मुख्य भाग पल्लवी, अनुपल्लवी तथा मुक्तयीश्वर होते हैं। वास्तव मे इसकी तुलना हिंदुस्तानी शैली के ठुमरी के साथ की जा सकती है।

जवाली : यह प्रेम प्रधान गीतों की शैली है। भरतनाटयम के साथ इसे विशेष रूप से गाया जाता है। इसकी गति काफी तेज होती है।

तिल्लाना : उत्तरी भारत के प्रचलित तराना के समान ही कर्नाटक संगीत में तिल्लाना शैली होती है। यह भक्ति प्रधान गीतों की गायन शैली है।

आधुनिक समय में भारतीय संगीत की विभिन्न विधाओं जैसे–वाद्य संगीत, कण्ठ संगीत, नृत्य संगीत, संगीत शास्त्र आदि इन सभी पर पाश्चात्य प्रभाव देखने को मिलता है। आज हारमोनियम, क्लैरियोनेट, गिटार, पियानों जैसे अनेक पाश्चात्य वाद्यों को हमने अपने भारतीय संगीत में स्वीकार तो किया ही है साथ ही इन विदेशी वाद्यों पर शास्त्रीय संगीत का सफलतापूर्वक वादन भी किया जा रहा है। इस तरह तालमाला, ताल लहरा, इलेक्ट्रिक तानपुरा, ट्यूनर इत्यादि अनेक डिजिटल उपकरण भी हमारे भारतीय संगीत में विशेष महत्व रखते हैं।

आधुनिक समय में पाश्चात्य प्रभाव से ही संगीत के अध्ययन क्षेत्र में विस्तार हुआ और संगीतशास्त्र के ज्ञान को वैज्ञानिक स्वरूप देने के उद्देश्य से ध्वनि विज्ञान, सौन्दर्यशास्त्र, चिकित्सा एवं दर्शन आदि क्षेत्रों में भी अध्ययन किया जाने लगा। न्यूयॉर्क के डॉ. एडवर्ड पोलाबास्की के अनुसार कहा कि "संगीत से रक्त संचालन प्रभावित होता है और शिराओं में नवजीवन का संचार होता है उन्होंने ध्वनि तरंगों का पथरी रोग पर विशेष प्रभाव देखा।"

वैश्वीकरण की प्रक्रिया आधुनिक समय पर यथार्थ है जो मानव–जीवन के सभी पक्षों को किसी न किसी रूप में प्रभावित कर रही है। वर्तमान समय में हमारे मूल्य व मान्यताओं में अनेक परिवर्तन प्रतीत हो रहे हैं। इस बदलाव ने व्यक्ति का केवल सामाजिक एवं भौतिक रूप ही परिवर्तित नहीं किया अपितु व्यक्ति की मानसिकता को भी बदला है।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप सम्पूर्ण संसार की आज दुरियाँ सिमट गयी हैं। वर्तमान समय में विश्व का संकुचन हो रहा है या हम दूसरे शब्दों में, कह सकते हैं कि यह वैश्वीकरण का ही प्रभाव है। सम्पूर्ण विश्व एक वैश्विक ग्राम हो गया है जहाँ कोई भी सूचना सोशल मीडिया के माध्यम से सूचनाएँ प्रसारित हो रही हैं जैसे–व्हाट्सएप, फेसबुक, यू–ट्यूब, इंटरनेट इत्यादि के द्वारा सूचनाएँ तीव्र गति से एक देश से दूसरे देश तक सूचनाओं का आदान–प्रदान बढ़ा है। "साइबर मीडिया" जो कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह इंटरनेट से जुड़ा हुआ है। इंटरनेट जनसंचार का सबसे खुला व्यापक और बहु–आयामी माध्यम है। इसमें मुद्रण, ध्वनि (रेडियो), दृश्य (दूरदर्शन), फिल्म आदि सभी प्रकार के संचार माध्यमों का संगम है। इसकी व्याप्त एक साथ विश्व भर में होती है। इसके विश्वव्यापी जाल (www) के माध्यम से पल भर से पूरे विश्व के ज्ञान और मनोरंजन का अंग बनाया जा सकता है।"

इस तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप संगीत के शास्त्रात्मक और क्रियात्मक दोनों ही पक्षों को समृद्ध बनाने में बहुत सहयोग मिला है। वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से वरिष्ठ कलाकारों की कला को चिरकाल तक संग्रहीत एवं संरक्षित किया जा सकता हे। माइक्रोफोन, लाउडस्पीकर जैसे ध्वनि–प्रसारक यंत्रों के आ जाने से अब कलाकारों एवं वाद्य यंत्रों की आवाज़ हजारों–लाखों लोग एक साथ सुन सकते हैं।

"हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत एक अमूल्य "सांस्कृतिक उत्पाद" है, जो वैश्वीकरण के बाजार में विक्रय योग्य है और जिसकी भारी मांग भी है तथा जिसे खरीदने के लिए कोई भी मूल्य दिया जा सकता है। यह कोई तकनीक या तकनीकी उत्पाद नहीं है जो किसी नये उत्पाद में स्थानान्तरित हो जाता है। यह आधुनिक तकनीकी उत्पादों से कहीं अधिक, स्थायी एवं दीर्घावधि तक टिके रहने वाला उत्पाद है।"

निष्कर्ष

निष्कर्षत : उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक कालखण्ड में वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संगीत का अवलोकन वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत को एक संवेदनशील न के साथ एक–दूसरे के साथ सांझा किया जा रहा है। वैश्वीकरण में वैज्ञानिक स्तर पर, नए–नए आविष्कारों ने महान् कलाकारों की कृतियों को संरक्षित रखने एवं विश्व स्तर पर जन–जन तक पहुँचाने के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी, दूरसंचार प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी व सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी ने संगीत शिक्षा एवं शोध कार्य को अधिक व्यावहारिक व सरल कर दिया है। साथ ही साथ विश्व स्तर पर हो रही नित नई खोजों, घटनाओं, अनुसंधानों अथवा नवीन तकनीक की जानकारी वैश्वीकरण से सरलता से प्राप्त हो रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. मित्तल, अंजली. (2016). "भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत", कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्सः नई दिल्ली–110002, पृष्ठ **58**

2. चंद, डॉ. हुकुम. (1998). "आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत", ईस्टर्न बुक लिंकर्सः दिल्ली–7, पृष्ठ **28**
3. कु. डॉ. आकांक्षी. (2011). "भारतीय संगीत और वैश्वीकरण", कनिष्ठ पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्सः नई दिल्ली–110002, पृष्ठ **27**
4. डॉ. आकांक्षी. (2011). "भारतीय संगीत और वैश्वीरकण", कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्सः नई दिल्ली–110002, पृष्ठ **50**
5. डॉ. आकांक्षी. (2011). "भारतीय संगीत और वैश्वीकरण", कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्सः नई दिल्ली–110002, पृष्ठ **50**